



# دفتر مجلس انصار اللہ بھارت

Office Of The Majlis Ansarullah Bharat

Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA



ساراंशِ خُتْبہ: جُم: سبّیہ دنا اُمّی رُل مومنین ہجرت میزِا مَسرور اہمَدِ خلیفہ تُل مَسیہ اَلِخامسِ اَبّی دہلّاہُ تآلا  
بین سہیل اَجّی بَیانِ فَرْمَدا 09.10.2026 سَٹان مَسجِدِ مُبارک، اِسلاما باد، یُ.کے.  
(اِخاءِ مہینے کی تیثی 9,1405 ہش)

## تَوکُّل (اَلّٰہ پر بھوسا) کے ہوالے سے ہجرت اکَدَس مَسیہ مَؤدِ اَلہی سَلام کا پاکِیّا نَمُنا۔

Mob: 9682536974 E.mail.

[ansarullah@qadian.in](mailto:ansarullah@qadian.in)

Khulasa khutba- 09.10.2026

محلہ احمديہ قاديان پنجاب 143516

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ

اَقْبَعِدْ عَوْدَ اللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ مَا لَكَ يَوْمَ الدِّينِ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّالِّيْنَ

تَشْهَدُ، تَوَكُّل اور سُر: فَاْتِها کی تِلاوت کے باءِ هُجْر اَنوَر، اَبّی دہلّاہُ تآلا نے فرمایا: ہجرت مَسیہ مَؤدِ اَلہی سَلام کے تَوکُّل (اَلّٰہ پر بھوسا) کے واکِیات بَیان کرتے ہوئے ہجرت میزِا بَشیر اہمَدِ ساہیب رَجّی لیکھتے ہیں کہ ڈاکٹر. میر محمد اسماعیل ساہیب نے یہ بَیان کیا کہ اِلاج میں ہُجْر کا تَرِکا تھا کہ کبھی اک ہی کِسم کا اِلاج نہیں کرتے تھے، بلکہ اک ہی بَیماری میں اَنگریزی دوا بھی دتے رھتے تھے اور یُونانی بھی، جو کوئی شَخس فَاَیْدَمَند بات کہ دے، اُس پر بھی اَمَل کرتے تھے۔ اِگر کسی کو رِخااب میں کُح اِلم ہوا ہو تو باج دَفّا اُس پر بھی اَمَل فرماتے تھے۔ ساٹ دُا بھی کرتے تھے اور اک ہی سَمَی میں ڈاکٹروں اور ہکیموں سے مَشویرا بھی لتے تھے۔ دوا کی کِتاب دِکھکر بھی اِلاج میں مَدَد لتے تھے۔ رَجّی اِلاج کو اک مُرکب (مِلا-جُلا) بنا دتے تھے اور اَسَل بھوسا اِپکا اَلّٰہ تآلا پر ہوتا تھا۔

اَنبیا اور اَم اَدَمی کی بَیّی کا فَرکّ وَاِجہ کرتے ہوئے ہُجْر فرماتے ہیں کہ اِگرچہ اِنسان کو بَشاریت کے تَکّاجے سے اِجّیراَب (ماَنو سَوا کے کارَن چِنتا) ہوتا ہے مِگر وہ ماَنو سَوا کی اک وِشِیّتا ہے اور سب اَنبیا بھی اِس میں شَرِک ہیں۔ جِسا کہ جَنگِ بَدْر میں اَوّہجرت ﷺ کو اِجّیراَب (چِنتا) ہوا تھا۔ اَم لوگوں اور اَنبیا میں یہ فَرکّ ہے کہ اَم لوگوں کی تَرہ اَنبیا کے اِجّیراَب میں نِراشا کبھی نہیں ہوتی۔ اُنکو اِس اَم پر یَکِیَن ہوتا ہے کہ رُدا کبھی اُنہیں جّاے نہیں کرے گا۔

فرمایا: مِرا اِپنا یہ اِال ہے کہ اِگر مُیّے جَلتی اِاگ میں بھی ڈالا جّاے تو بھی یہی رِخاال ہوتا ہے کہ جّاے کبھی نہیں ہوُگا۔ اِجّیراَب (چِنتا) تو ہوگا کہ اِاگ ہے۔ اِس سے اِنسان جَل جاتا ہے، مِگر اُمّیّد ہوتی ہے کہ اَبھی اِواج اِاگی کہ اِے اِاگ! تُو اِبْرہِم کے لِیے اِڈی

भी हो जा और उसके लिए सलामती का बाइस (वजह) भी बन जा। लेकिन दूसरे लोगों के इज़्तिराब में यास होता है, नाउम्मीदी होती है, जिनका ईमान नहीं होता खुदा पर, तो उनको उम्मीद नहीं होती और यह कुफ़्र है। यह जो हालत है यह कुफ़्र है। पस बेचैनी में जिस तरह अल्लाह तआला पर तवक्कुल अंबिया का ख़ासा है इसी तरह एक मोमिन को भी चाहिए कि अंबिया और ख़ास तौर पर आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नत पर चलते हुए यास और नाउम्मीदी को अपने पास न आने दें। बेचैनी में भी अल्लाह तआला पर तवक्कुल होना चाहिए। अस्बाब (साधन) का इस्तेमाल हो। दुआओं पर ज़ोर हो और फिर अल्लाह तआला पर तवक्कुल हो। आपने मोमिनों को भी यह नसीहत फ़रमाई कि मोमिन का भी यह काम है कि उसको अल्लाह तआला पर तवक्कुल रहना चाहिए और इस तरह निराशा (मायूसी) नहीं आनी चाहिए।

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि लिखते हैं कि मुंशी ज़फ़र अहमद साहब कपूरथलवी रज़ि ने बयान किया कि जलसा सालाना के मौके पर माली तंगी की वजह से हज़रत मसीह मौऊद ने मेहमानों के लिए अपनी अहल्या का ज़ेवर फ़िरोख़्त या रहन रखवा कर इंतज़ाम फ़रमाया। दो दिन बाद जब दोबारा खर्चे की फ़िक्र हुई तो हुज़ूर ने फ़रमाया कि जिसके मेहमान हैं, वह खुद इंतज़ाम करेगा; अगली सुबह मुख्तलिफ़ मक़ामात से पचास और सौ रुपये के कई मनी ऑर्डर आए। इस वाक़ए से सबक़ मिलता है कि अल्लाह तआला पर कामिल तवक्कुल रखने वालों को ज़रूरत के वक्त उसकी तरफ़ से ग़ैबी मदद पहुँचती है।

हज़रत खलीफ़तुल मसीह अव्वल बयान करते हैं कि हमारे हज़रत साहिब (हज़रत मसीह मौऊद अलै.) फ़रमाया करते थे कि किसी को खुशी है कि मेरे पास माल है, किसी को खुशी है कि मेरी औलाद बहुत है और किसी को खुशी है कि मेरा जत्था बहुत है। मगर मैं खुश हूँ कि मेरा खुदा जो है वो कादिर-ए-मुतलक़ है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाया करते हैं कि असल राज़िक़ खुदा तआला है। वह शख्स जो उस पर भरोसा करता है कभी रिज़क़ से महरूम नहीं हो सकता। वह हर तरह से और हर जगह से अपने पर तवक्कुल करने वाले शख्स के लिए रिज़क़ पहुँचाता है। खुदा तआला फ़रमाता है कि जो मुझ पर भरोसा करे और तवक्कुल करे मैं उसके लिए आसमान से बरसाता और कदमों में से निकालता हूँ। पस चाहिए कि हर एक शख्स खुदा तआला पर भरोसा करे।

हज़रत शेख याकूब अली साहब इफ़्फ़ानी रज़ि रिवायत करते हैं कि हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद साहिब रज़ि के बचपन में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने एक ईमान अफ़रोज़ कहानी सुनाई। एक बुजुर्ग की नसीहत पर एक चोर ने चोरी छोड़कर अल्लाह तआला पर तवक्कुल और तक्रवा इख़्तियार किया तो उसकी ज़रूरतें ग़ैबी तौर पर पूरी होने लगीं। कुरानी आयात ने उसके दिल में खुदा तआला की महानता और मारिफ़त को इस कदर बढ़ा दिया कि वह इश्क़-ए-इलाही में तड़प उठा। यह वाक़आ सबक़ देता है कि सच्चा तवक्कुल और तक्रवा इंसान को खुदा तआला की कुर्बत और मारिफ़त के ऐसे मक़ाम तक पहुँचा देते हैं जहाँ दुनियावी ज़रूरतें भी उसके फ़ज़ल से पूरी होती हैं।

हुज़ूर फ़रमाते हैं लोग आम तौर पर कहते हैं कि बच्चों को छोटे बच्चों को ज्यादा गहरी बातों की समझ नहीं आती लेकिन हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने हज़रत मुसलेह मौऊद हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद साहिब रज़ि को जब उनकी उम्र जब सिर्फ़ नौ साल थी

यह कहानी सुनाई। यकीनन हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद साहिब रज़ि की ज़हानत के मुताबिक भी यह कहानी सुनाई होगी आपको पता होगा कि समझ जाएगा बच्चा, लेकिन यह भी आपके पेश-ए-नज़र होगा कि बचपन से ही आप में बच्चों में तवक्कुल की अहमियत पैदा की जानी चाहिए। पस यह तरबियत के उसूल हम सब के लिए रहनुमा हैं।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाया करते थे कि मेरे नज़दीक सबसे बड़े मुशरिक कीमियागर (जड़ी-बूटियों से हर इलाज की खोज में मग्न) हैं। यह रिज़क की तलाश में यूँ मारे-मारे फिरते हैं और उन अस्बाब से काम नहीं लेते जो रिज़क के हुसूल के लिए अल्लाह तआला ने जाइज़ तौर पर मुकर्रर किए हैं... फ़रमाया तक्रवा एक ऐसी चीज़ है कि जिसे यह हासिल हो उसे गोया तमाम जहान की नेमतें हासिल हो गईं। याद रखो! मुत्तकी कभी किसी का मोहताज नहीं होता बल्कि वह उस मक़ाम पर होता है कि वह जो चाहता है खुदा उसके माँगने से पहले मुहैया कर देता है। आप फ़रमाते हैं: मैंने एक कश्फ़ में अल्लाह तआला को देखा कि मेरे गले में हाथ डालकर अल्लाह तआला फ़रमाता है कि जे तूँ मेरा हो रहे सब जग तेरा हो।

पस यह वह नुस्खा है जो तमाम अंबिया और औलिया और सुलहा का आजमाया हुआ है। नादान लोग इसे छोड़कर बूटियों की तलाश में मारे-मारे फिरते हैं। इतनी मेहनत अगर वह बूटियों के पैदा करने वाले के लिए करते तो सब मन-मानी मुरादें पा लेते।

हुज़ूर फ़रमाते हैं: पादरी अब्दुल्लाह आथम के लिए पन्द्रह माह में हलाकत की पेशगोई थी। जब पन्द्रह माह की मियाद पूरी हो रही थी तो उस वक्त बाज़ अहबाब रो-रो कर दुआएँ कर रहे थे कि आथम मर जाए। मगर हुज़ूर ने अहबाब के इस फ़िल को नापसंद किया और फ़रमाया कि क्या किसी को खुदा से भी बढ़कर उसके कलाम के लिए ग़ैरत हो सकती है? फ़रमाया कि खुदा तआला ने जब यह बात कही है कि ऐसा होगा तो हमें ईमान रखना चाहिए कि ऐसा ज़रूर होगा... हमारा काम सिर्फ़ इतना है कि जब हमने एक शख्स को रास्तबाज़ मान लिया है उसकी बातों पर यकीन रखें।

अब्दुल्लाह आथम के साथ मुबाहिसे के दौरान जब एक मौक़े पर बाज़ ऐसे सवालात रखे गए जिनके जवाबात बाज़ अहबाब के नज़दीक मुश्किल थे और उनकी दानस्त कुछ उनकी अक्ल के मुताबिक़ उनके जवाब के लिए मशविरा किया जा सकता था। ऐसे में अपने हितों के अनुकूल चीज़ें तलाश करके हुज़ूर की ख़िदमत में अर्ज़ किया गया कि हुज़ूर! कल के मुबाहिसे (मज़हबी बहस व तकरार) के लिए मशविरा किया जा सकता है। हुज़ूर मुस्कुराए और फ़रमाया: आपकी दुआ काफ़ी है।

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि लिखते हैं कि अंबिया अक्सर उमूर में मशविरा लेते हैं और उनसे बढ़कर कोई मशविरा नहीं लेता मगर कुछ ऐसे अवसर होते हैं कि जिन में दूसरे वास्तों को छोड़कर वह महज़ खुदा की इमदाद पर भरोसा करना पसंद करते हैं।

जब हज़रत मसीह मौऊद 'आइना कमालाते इस्लाम' का अरबी हिस्सा लिख रहे थे तो आपने एक बड़ा दो वरक़ा (सफ़हः) हज़रत हकीम मौलवी नूरुद्दीन साहब को दिया ताकि हज़रत मौलवी अब्दुल करीम साहब सियालकोटी को फ़ारसी तर्जुमा करने के लिए पहुँचा दिया जाए। वह ऐसा मज़मून था कि उसकी फ़साहत व बिलागत (सुबोधता, स्पष्टता, स्वच्छता, साफ़ भाषा और

समझने में आसान) पर हज़रत मसीह मौऊद को नाज़ था कि अल्लाह तआला ने बहुत अच्छा मज़मून सुझाया है। मगर हज़रत मौलवी नूरुद्दीन साहब से यह दो वरक़ा (सफ़हः) कहीं गिर गया। जब हज़रत मौलवी अब्दुल करीम साहब सियालकोटी ने उन सफ़हात के बारे में पूछा तो हज़रत मौलवी नूरुद्दीन साहब का रंग फ़क हो गया। बेहद तलाश किया गया मगर वह न मिला। हज़रत मसीह मौऊद अलै. को सूचित किया गया तो वे हमेशा की तरह खुश और मुस्कुराते हुए बाहर आए और ख़फ़ा होना या घबराहट का इज़हार करना तो दरकनार उल्टा अपनी तरफ से माज़रत फ़रमाने लगे कि मौलवी साहब को मसूदा (ड्राफ़्ट / प्रारूप) गुम होने से बेवजह की चिंता हुई। मुझे मौलवी साहब की तकलीफ़ की वजह से बहुत अफ़सोस है। मेरा तो यह ईमान है कि अल्लाह तआला अपने फ़ज़ल से गुमशुदा काग़ज़ से बेहतर मज़मून लिखने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा देगा। हज़रत मसीह मौऊद अलै. फ़रमाते हैं कि इस्लाम की खिदमत जो शरूख़ दरवेशी और क़नाअत से करता है वह एक मुअजिज़ा (अद्भुत, चमत्कार, आश्चर्यजनक) और निशान हो जाता है। जो शरूख़ जमइयत के साथ करता है उसका मज़ा नहीं आता क्योंकि तवक्कुल अलल्लाह का पूरा लुत्फ़ (आनंद) नहीं रहता और जब तवक्कुल पर काम किया जाए तो अल्लाह मदद करता है और यह बातें रूहानियत से पैदा होती हैं।

फ़रमाया कि असल में तवक्कुल ही एक ऐसी चीज़ है कि जो इंसान को कामयाब और बामुराद बना देती है। अल्लाह तआला फ़रमाता है जो अल्लाह पर तवक्कुल करता है अल्लाह उसको काफ़ी हो जाता है बशर्ते कि सच्चे दिल से तवक्कुल के असली मफ़हूम को समझकर सिदक-ए-दिल से कदम रखने वाला हो और सब्र करने वाला मुस्तकिल मिज़ाज (स्थिर मन वाला) हो। मुष्किलात से डर कर पीछे न हटे।

हुज़ूर फ़रमाते हैं कि अगर इंसान पर दीन के ग़म ग़ालिब आ जाएं तो दुनिया के कारोबार का ख़ुदा ख़ुद मुतकफ़्फ़ल (ज़िम्मेदार) हो जाता है। अफ़सोस है कि बड़े-बड़े हादिसात (प्रमुख घटनाएँ) रोज़ हो रहे हैं मगर लोग हैं कि परवाह नहीं करते, तवज्जो नहीं करते। मूसा के काफ़िर ही अच्छे थे कि जब उन पर अज़ाब नाज़िल होते थे उस वक्त तो तवज्जो करते थे और कहते थे कि यह टल जाए तो मान लेंगे। मगर आज कल के काफ़िर इनसे भी ज्यादा सख़्त जान हैं कि नित नए अज़ाब आते हैं, नई-नई सूरत में ख़ुदा का कहर (क्रोध) नाज़िल होता है लेकिन यह हैं कि कान पर जूँ नहीं चलती। अल्लाह तआला का क़दीम से यह वादा था कि आख़िरी ज़माने में तरह-तरह के अज़ाब आएंगे, इस वक्त बाज़ हिदायत पा जाएंगे और अक्सर हलाक होंगे। निशान तो ख़ुदा दिखाता है मगर निशान से वही फ़ायदा उठाते हैं जो मोमिन होते हैं।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला इन दुनियादारों को अक्ल दे कि यह अल्लाह तआला की तरफ रुजू करें और अपनी दुनिया और आख़िरत संवारने वाले हों और हम जो हज़रत मसीह मौऊद को मानने वाले हैं हमें भी ईमान और यकीन में बढ़ाए और हम दुआओं के साथ तवक्कुल के आला मयार हासिल करने वाले और उसमें बढ़ने वाले भी हों।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ مُحَمَّدٌ هُوَ نَسْتَعِيْنُهُ وَنَسْتَغْفِرُهُ وَنُؤْمِنُ بِهِ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِيْهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهُ وَمَنْ يُضِلِّهِ اللّٰهُ فَلَا هَادِيَ لَهُ وَاشْهَدُ اَنْ لَا اِلَهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَاشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ. عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَأْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاتِّتَاءِ ذِي الْقُرْبَى وَيَنْهَى عَنِ الْفَحْشَاءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يُسْتَجِبْ لَكُمْ وَلِذِكْرِ اللّٰهِ اَكْبَرُ.

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुगम सौम्य एवं सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, सम्पर्क अनुवादक-9781831652

टोल फ्री नम्बर अहमदिया मुस्लिम जमात, पंजाब - 18001032131